17

केवल एक ''रहस्य'' जिसे जानना हमारे लिए आवश्यक है

(फिलिप्पियों 4:10-14)

''मेरे पास एक रहस्य है'': इन शब्दों में कुछ आकर्षण है। कान खड़े हो जाते हैं और लोग फुसफुसाते हुए आगे की ओर झुकते हैं, ''वह क्या है? मैं किसी को नहीं बताने वाला!'' कुछ ''गुप्त धर्म'' इस इच्छा का इस्तेमाल भोले-भाले लोगों को फंसाने और भेदों को जानने के लिए करते हैं। उनके पास ''रहस्यमय'' बातें हैं और वे ''रहस्यमय'' संस्कारों में भाग लेते हैं। वे संसार के भेदों की कुंजी अपने पास होने का दावा करते हैं। वे उस ज्ञान का वायदा करते हैं, जो केवल उन्हीं के पास है। इन चतुराइयों के बिल्कुल विरोध में, अपने वचन पाठ की आयत 12 को देखें। वहां पौलुस ने उस वास्तविक और आवश्यक ''रहस्य'' का संकेत दिया, जो उसके पास था: ''... हर एक बात और सब दिशाओं में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना और बढ़ना घटना सीखा है।'' अरन पार्मर ने इसे ''केवल वह रहस्य, जिसे हमारे लिए जानना आवश्यक है'' कहा है।[1]

हम फिलिप्पियों के नाम पौलुस के पत्र के अन्त में आ रहे हैं। उसका एक अन्तिम काम रह गया था: उस दान के लिए, जो उन्होंने इपफ्रुदीतुस के हाथ भेजा था, धन्यवाद जताना। बेशक प्रेरित केवल ''धन्यवाद'' नहीं कह सकता था। इसके बजाय, ''जैसा कि पौलुस के लेखों की पहचान है, धन्यवाद जैसी आसान सी बात कहने के लिए भी वह आत्मिक और व्यावहारिक समझ की गहराई के साथ लम्बा पद्य बना देता है।''[2] इस पाठ में हम प्रेरित के संतुष्टि के ''रहस्य'' सहित उन ''गहरे पलों'' को देखेंगे।

एक संतुष्ट करने वाली स्थिति (4:10)

पौलुस ने पहले फिलिप्पियों के दान का संकेत दिया था (1:5; 2:25-30); अब वह उस विषय पर और विस्तार में बात करने लगा (देखें 4:14, 18)। हमारा वचन पाठ पत्र में आनन्दित होने के अन्तिम हवाले से आरम्भ होता है: ''मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हूं'' (आयत 10क)। आनन्दित होने का हवाला पौलुस ने यहां पहली बार दिया: वह ''अत्यधिक'' आनन्दित था, जो इस बात का संकेत है कि उसे कितना अच्छा लग रहा था। वह इस प्रकार आनन्दित कैसे हुआ? प्रेम की फिलिप्पियों की अभिव्यक्ति के कारण। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे कि प्रेरित की प्रसन्ता दान के लिए उतनी नहीं थी, बल्कि इस तथ्य के लिए थी कि उन्होंने लगाव दिखाया था। इस भाग में ज़ोर वस्तुओं पर नहीं, बल्कि लोगों पर है। यानी दान पर नहीं, बल्कि देने वालों पर है।

पौलुस ने लिखा, ''मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हूं कि अब इतने दिनों के बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है'' (आयत 10क, ख)। अंग्रेजी भाषा में इस वाक्य के दूसरे

भाग को थोड़ी सी डांट के रूप में लिया जा सकता है, परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में इसका कोई संकेत नहीं है। प्रेरित ने आगे कहा, ''निश्चय तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला'' (आयत 10ग)। मूल धर्मशास्त्र में, ''तुम्हें विचार था'' अधूरे वाक्य में है, जो कालांतर में निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। इसका अनुवाद ''*तुम* चिन्ता करते रहे'' हो सकता है। उनकी दिक्कत यह थी कि उन्हें अपनी चिन्ता व्यक्त करने ''का अवसर नहीं मिला।'' NCV में ''तुम्हारे लिए इसे दिखाने का कोई तरीका नहीं था'' है। पौलुस ''उनके विचारों से निकला नहीं था, पर उनकी पहुंच से दूर था!''[3]

हम पक्का नहीं बता सकते कि फिलिप्पी के मसीही लोगों को पौलुस की सहायता करने का अवसर क्यों नहीं मिला। हो सकता है कि मकिदुनिया से निकलने के बाद प्रेरित के साथ यरूशलेम के मार्ग में प्रेरित से उनका सम्पर्क टूट गया (प्रेरितों 20:6, 16)। उसके बाद पौलुस के साथ बहुत कुछ हुआ था! शायद उनका ''भारी कंगालपन'' (देखें 2 कुरिन्थियों 8:2) थोड़ी देर के लिए रुकावट बन गया था। यह भी सम्भव है कि उन्हें धन को वहां पहुंचाने के लिए, जहां उनका मित्र था कोई आदमी नहीं मिल रहा था। जो भी हो, सहायता करने की उनकी नाकामी का कारण उनके नियन्त्रण के बाहर की परिस्थितियां थीं।

अन्ततः वे उस समस्या से (वह जो भी थी) उभर आए और पौलुस के लिए उनकी चिन्ता ''जागृत'' हो गई (फिलिप्पियों 4:10ख)। अनुवादित शब्द ''जागृत'' ''फिर से फलने-फूलने या खिलने'' के अर्थ वाले मिश्रित यूनानी शब्द *anathallo* का एक रूप[4] है। NEB में है ''मेरे लिए तुम्हारी परवाह अब फिर से खिल गई है।'' ''जागृत'' शब्द का अर्थ यूनानी अनुवाद में सूखे वृक्ष को हरा होने के लिए किया जाता था (देखें यहेजकेल 17:24)।

इससे मुझे आरकैंसा का बसन्त का मौसम याद आता है। सर्दी के महीनों में, हवा जम जाती है, घास सूख जाती है, पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं और कोई फूल दिखाई नहीं देता। फिर मौसम थोड़ा गर्म होने लगता है और बारिशें शुरू हो जाती हैं। हर जगह खिलते फूलों के चमचमाते रंगों के साथ हर तरफ हरियाली फिर से नज़र आती है। सर्दी में पृथ्वी और पेड़ बने रहते हैं, पर बसन्त में उन्हें फिर से खिलने के लिए बारिश और धूप की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार पोलुस के लिए फिलिप्पी की चिन्ता कभी मरी नहीं थी, बल्कि इसे फिर से खिलने के लिए सही परिस्थिति चाहिए।

लम्बी, ज़ोरदार सर्दी के बाद हर चीज़ के खिल जाने को देखना अच्छा नहीं लगता? पौलुस फिलिप्पियों के मसीही लोगों का उसके लिए ''जागृत'' हुआ ध्यान लिखते हुए ऐसी ही प्रसन्नता दिखा रहा था।

एक चौंकानी वाली बात (4:11, 12, 14)

यह कहने के बाद उसे फिलिप्पियों के दान से बड़ा आनन्द मिला है, पौलुस ने यह जोड़ने की उम्मीद की होगी, ''आखिर, मेरी *ज़रूरत* थी, तुम ने उसे भेज दिया! मुझे नहीं मालूम कि इसके न होने पर मैं क्या करता!'' इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रेरित को सहायता की आवश्यकता *थी।* आयत 14 में उसने ''अपने क्लेश'' की बात की, जो कमी का संकेत देने के लिए मज़बूत शब्द है (जैसा हम अगले पाठ में देखेंगे)। परन्तु पौलुस अपने पाठकों को बताना चाहता था

कि उसका आनन्द करना दान के लिए उतना नहीं था, जितना उनके द्वारा दिखा गया *लगाव* था। इसी कारण उसने जल्दी से जोड़ दिया, ''यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूं'' (आयत 11क)। मुझे अपनी लड़कियों के वे उपहार देना याद है, जब वे छोटी थीं। मेरे लिए उनके उपहार बड़े खास होते थे, इसलिए नहीं कि उन से मेरी कोई आवश्यकता पूरी होती थी, बल्कि इसलिए क्योंकि उन से मेरे लिए मेरी बेटियों का प्यार दिखाई देता था।

TEV में आयत 11 के पहले भाग का अनुवाद ''मैं इसलिए यह नहीं कह रहा क्योंकि मुझे लगता है कि मेरी उपेक्षा की गई है।'' हम इस विचार को संदर्भ से भी ले सकते हैं: ''और मैं और दान भेजने का संकेत देने के लिए ऐसा नहीं कह रहा हूं'' (देखें आयत 17क)।

घोषणा

पौलुस ''विश्वास के अपने सबसे यादगारी वाक्यों में से एक'' को लिखने के लिए आगे बढ़ा[5]: ''क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं'' (आयत 11ख)। यूनानी धर्मशास्त्र में ''मैं'' पर ज़ोर दिया गया है।[6] यह तो ऐसा है, जैसे प्रेरित कह रहा हो, ''शायद दूसरों ने संतुष्ट होना नहीं सीखा है, पर *मैंने* सीखा है।''

पौलुस ने मन में जिन ''परिस्थितियों'' की बात की, उनमें से कुछ अगली आयत में दी गई हैं: ''मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं: हर एक बात और सब दशाओं में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है'' (आयत 12)। यूनानी वाक्यांश के अनुवाद ''हर एक बात और सब दशाओं में'' का अनुवाद ''हर बात और सब चीज़ों में'' हो सकता है। व्यक्तिगत रूप में ''हर बात में'' और सामूहिक रूप में ''सब बातों में'' पौलुस ने जीवन से निपटना सीख लिया है।

पौलुस द्वारा बताई गई बातों को जीवन के उतार-चढ़ाव, ऊपर-नीचे या अच्छे और बुरे समय माना जा सकता है। प्रेरित ने अपने जीवन की कर्मियों को अनुभव किया था। ''दीन होना भी जानता हूं'' का अनुवाद यूनानी शब्द (*tapainosthi*) से किया गया है, जिसका अर्थ ''दीन होना'' है, यह उसी मूल शब्द से लिया गया है, जिसका अनुवाद 2:8 में ''दीन'' हुआ है। 4:12 में इस शब्द का अर्थ अपर्याप्त संसाधनों से दूसरों पर निर्भर होने की दीनतापूर्व स्थिति है। पौलुस ने इस निराशाजनक स्थिति को ''घटना'' नाम दिया है। उसने ऐसी स्थिति का विशिष्ट उदाहरण ''भूखा रहना'' दिया। एक और जगह उसने लिखा ''... कष्ट में; ... भूख-प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में'' (2 कुरिन्थियों 11:27)। आपने भी सम्भवतया जीवन में ऐसा उतार देखा होगा। पौलुस ने सीख लिया था कि ''बुरे दिनों'' से कैसे निपटना है और हमरा वचन पाठ यही बताता है।

कोई रुकावट डालना चाह सकता है, ''परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें सभी आवश्यक चीज़ें देता रहेगा [देखे मत्ती 6:31-33; भजन संहिता 37:25]। निश्चय ही परमेश्वर का बालक कभी भूखा नहीं रहेगा!'' पौलुस परमेश्वर का बालक था पर वह ''बार-बार'' बिना खाने के ''रहता था'' (2 कुरिन्थियों 11:27)। भिखारी लाज़र परमेश्वर द्वारा स्वीकृत था पर वह भी भूखा था (लूका 16:20-22)। हां, परमेश्वर हमारी देखभाल करता है इस पर मैं थोड़ी देर और बात करूंगा और उसे हमारे पेटों का ध्यान है, पर उसे इससे भी अधिक चिन्ता हमारे प्राणों

की है। आज कुछ लोग यह सिखाते हैं कि परमेश्वर का विश्वासी बालक कभी बीमार, भूखा या निर्धन नहीं होगा। अपनी इच्छा पूरी करने वाली यह गलती तो पौलुस को ''अविश्वासी'' बना देती, क्योंकि कई बार प्रेरित में यह सभी बातें हुईं थीं (2 कुरिन्थियों 11:27; 12:7)।

पौलुस के जीवन में केवल उतार ही नहीं, बल्कि चढ़ाव भी बहुत हैं। उसने लिखा, ''मैं बढ़ना भी जानता हूं'' और उसने ''बढ़ना सीखा'' है। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि पौलुस धनाढ्य परिवार से आया था और एक समय में उसे विरासत भी मिली थी। हो सकता है पर शायद वह उन समयों की बात कर रहा था, जब भाइयों की उदारता से उसकी आवश्यकताओं से अधिक दे दिया गया (देखें फिलिप्पियों 4:18)। फिर बहुतायत में होने का प्रेरित का उदाहरण भोजन से सम्बन्धित था जिसमें उसने ''तृप्त होने'' की बात की। क्या आपने खाने के बाद कभी पेट पर हाथ मारते लम्बी सांस लेते हुए कहा है ''मैं तृप्त हूं''? तो फिर समझ लें कि पौलुस ने क्या कहा था।

कई लोग चकित होंगे कि पौलुस ने कहा, ''मैं ... बढ़ना भी जानता हूं।'' मैं उनकी आपत्ति करने की कल्पना कर सकता हूं, ''पर खुशहाली में रहना *सब को* आता है।'' नहीं, उन्हें नहीं आता कम से कम हर किसी को तो समृद्धि में वैसे रहना नहीं आता *जैसे परमेश्वर चाहता है कि लोग रहें।* निर्धनता की तरह समृद्धि में भी कई खतरे हैं, शायद इसमें उससे भी अधिक हैं। पौलुस ने चेतावनी दी:

> पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। क्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है (1 तीमुथियुस 6:9, 10)।

किसी के निर्धन होने पर खतरा उसके निराश होने का होता है। धनवान होने पर खतरा घमण्डी होने का रहता है (देखें प्रकाशितवाक्य 3:17)। अगूर ने इसलिए प्रार्थना की, ''... मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर। ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इनकार करके कहूं कि यहोवा कौन है? या अपना भाग भोकर चोरी करूं, और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं'' (नीतिवचन 30:8, 9)।

पौलुस ने ''न तो निर्धनता को उसे अपनी प्रतिष्ठा कम करने दी और न समृद्धि को अपने आपको ऊंचा उठाने दिया।''[17] वह समझता था कि जीवन की परिस्थितियां एक पल में बदल सकती हैं और इनमें से कोई भी परिस्थिति यह नहीं बता सकती कि वास्तव में वह क्या है। उसका मानना था कि वह और प्रभु उसके साथ होने वाली किसी भी बात से निपट सकते हैं। ''मैंने सीखा है कि *जिस* दशा में हूं; उसी में सन्तोष करूं।'' यानी वह ''अच्छी हो या बुरी।'' उसकी बात हमें चकित करती है। वास्तव में यह मेरा सिर शर्म से झुका देती हैं, क्योंकि मुझे मानना पड़ेगा कि मैं अपने जीवन की परिस्थिति से कई बार संतुष्ट नहीं होता हूं।

एक और जगह पौलुस ने लिखा कि ''... सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है, क्योंकि न हम जगत में कुछ लेकर आए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने

और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 6:6-8)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5)।

परिभाषाएं

अब समय रुककर यह पूछने का है कि ''पौलुस के यह कहने का क्या *अर्थ* था कि वह सन्तुष्ट है?'' सन्तोष शब्द को कई बार गलत समझ लिया जाता है। सन्तोष अज्ञानता पर आधारित आात्मसंतोष या झूठी तसल्ली नहीं है। ''यह [परिस्थितियों] के बुरा होने पर उन्हें अच्छा दिखाना नहीं है। यह हर समस्या के सकारात्मक पहलू को देखने की कोशिश मात्र नहीं है।''[8]

''सन्तोष'' पर मैंने जितनी भी चर्चाएं सुनी हैं। उन में से अधिकतर अंग्रेज़ी शब्द की परिभाषाओं पर अधारित हैं। कई बार अंग्रेज़ी शब्द *contentment* और *satisfaction* में अन्तर किया जाता है: ''जो कुछ हमारे पास है contment (सन्तुष्ट होना चाहिए)।'' परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें तृप्त होकर बेहतर करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इस वाक्य में कुछ सच्चाई है परन्तु फिलिप्पियों 4:11 में अनुवादित ''सन्तोष'' के मूल यनानी शब्द का अर्थ ''सन्तुष्ट होना भी हो सकता है।''[9] कई अनुवादों में आयत 11 में ''content'' के बजाय (या के साथ) ''satisfied'' है (AB, NCV, CEV, TEV)।

यदि हमें सचमुच में समझना है कि पौलुस के कहने का क्या अर्थ था तो हमें अंग्रेज़ी के बजाय यूनानी शब्द को देखना होगा। 1 तीमुथियुस 6:6-8 और इब्रानियों 13:5 में अनुवादित शब्द ''content'' (*arkeo*) के एक रूप का अर्थ ''पर्याप्त'' है। फिलिप्पियों 4:11 में इस्तेमाल किया गया शब्द *autarkes* का एक रूप ''स्वयं'' (autos) के लिए शब्द के साथ arkeo को मिलाने वाला मिश्रित शब्द है।[10] NASB में फिलिप्पियों 4:11 में ''content'' शब्द पर टिप्पणी है: ''या *आत्म-पर्याप्त।*'' REB में है ''मैंने अपनी हर परिस्थिति में आत्म पर्याप्त होना सीख लिया है।'' यह शब्द ''उस व्यक्ति के विवरण के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जो अनुशासन के द्वारा बाहरी परिस्थितियों से छूट गया था और जिसने अपने भीतर संसाधनों को ढूंढ़ लिया था, जो आने वाली किसी भी परिस्थिति के लिए पर्याप्त से बढ़कर था।''[11]

Autarkes पौलुस के समय के सतोइकी दार्शनिकों का पसन्दीदा शब्द था। उनका लक्ष्य हर इच्छा का इनकार करके और प्रेम और दूसरों की सम्भाल सहित मन की हर भावना को निकालकर पूरी तरह से आत्मपर्याप्त बनना था। टी. आर. ग्लोवर ने कहा है, ''सतोयकी लोगों ने दिल को वीराना बना लिया था और इसे शान्ति नाम दिया था।''[12] अलेस मोटायर ने लिखा है कि *autarkes* ''का इस्तेमाल सतोयकी दार्शनिकों द्वारा भावना रहित व्यक्ति, लकड़ी की तरह अकड़े, अर्थात ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता था जिसे कोई चीज़ छू नहीं सकती थी। ...''[13] यदि आप पौलुस के स्वभाव के बारे में थोड़ा कुछ जानते हैं, तो आप जानते हैं कि उसने *autakres* शब्द का इस्तेमाल इस अर्थ में नहीं किया।

> [पौलुस] भावनाहीन भाग्यवादी या सतोइकी [नहीं था]। इसमें ''ईश्वरीय असन्तुष्टि'' जैसी कोई बात है। ऐसी परिस्थितियां हो सकती हैं जिनसे उदासीन रहना पाप होगा।

अपनी कमियों से संतुष्ट होना, यानी दूसरों के दुख और निराशा में होने पर परवाह न करना, इतने संसार के अनुग्रह के सुसमाचार से अज्ञानी होने पर परेशान न होना–पौलुस की सन्तुष्टि ऐसी नहीं है।[14]

दूसरी ओर प्रेरित के कहने का यह अर्थ नहीं *था* कि वह अपने आप में तृप्त है। वह सन्तोष और प्रसन्नता के लिए बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर *नहीं* था। अफ़सोस कि हम में से कुछ लोगों को लगता है कि सन्तुष्ट होने के लिए बाहरी परिस्थितियों का होना आवश्यक है:

- ''काश! मेरे पास और धन होता।'' या ''काश! मुझ पर कुछ ही बातों की जिम्मेदारी होती। ...''
- ''जब मुझे अच्छी पत्नी/पति मिल जाए। ...'' या ''जब मेरे बच्चे हो जाएं। ...''
- ''काश यदि मुझे और जिम्मेदारी मिल जाए।'' ''यदि मेरे पास कम जिम्मेदारी होती। ...''

पौलुस की सन्तुष्टि बाहरी परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि भीतर पर्याप्त पर थी। परन्तु सतोयकियों की शिक्षा के बिना व्यक्तिगत संसाधनों पर आधारित पर्याप्तता नहीं थी। इसके विपरीत यह ईश्वरीय संसाधनों पर आधारित थी (देखें 2 कुरिन्थियों 9:8; 12:9, 10)। फिलिप्पियों 4 की 11 और 13 आयतों को इकट्ठा मिलाएं तो आपको यह विरोधाभास मिलेगा: पौलुस परिस्थितियों से *स्वतन्त्र* था क्योंकि वह मसीह पर *निर्भर* था। आयत 13 का अनुवाद AB में ''मैं मसीह की पर्याप्तता में आत्म पर्याप्त हूं।''

आयत 13 को देखने से पहले, एक और शब्द है जिस पर हमें कुछ पल देने चाहिए और वह शब्द है ''सीखा'': ''मैं ने यह *सीखा* है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं'' (आयत 11)। मूल धर्मशास्त्र में ''सीखा'' अनिश्चित भूतकाल में जो कालांतर में हुई एक बार की घटना का संकेत देता है। इससे कइयों ने यह मान लिया है कि प्रेरित को सन्तुष्टि पर समझ समय के एक पल में मिली थी, शायद उसके मन परिवर्तन के समय। परन्तु 12 और 13 आयतों के प्रकाश में आयत 11 पर विचार करने पर हम निष्कर्ष निकालते हैं कि पौलुस कह रहा था कि उसका *पूरा* मसीही जीवन सीखने का अनुभव ही रहा था। अपने जीवन से उसने यही निष्कर्ष निकाला था (कालांतर में एक बार की घटना), प्रभु की सहायता से वह किसी भी चुनौती से निपट सकता है।

पौलुस का जन्म जीवन की किसी भी परिस्थिति में सन्तुष्ट होने की स्वाभाविक योग्यता के साथ नहीं हुआ था। न ही उसे यह ''दान'' उसके बपतिस्मे के समय आश्चर्यकर्म से दिया गया था। इसका सबक प्रेरित ने पीड़ादायक अनुभव (देखें 2 कुरिन्थियों 12:7–10) और सच्चे मन से प्रार्थना के द्वारा *सीखा* था (देखें फिलिप्पियों 4:6, 7)। यदि पौलुस को सबक सीखना पड़ा था तो हमें भी सीखना पड़ेगा। यदि पौलुस सीख *सकता* है तो हम भी सीख सकते हैं।

मज़बूत बनाने वाला ''रहस्य'' (4:12, 13)

''रहस्य''

सन्तुष्टि को सीखने के लिए पौलसु के ''रहस्य'' को जानना आवश्यक है। उसने कहा,

''मैंने तृप्त होना, भूखा रहना और बढ़ना सीखा है'' (आयत 12ख)। ''मैंने सीखा है'' वाक्यांश का इस्तेमाल एक ही यूनानी शब्द (*memuemai*) जो *memu* का एक रूप है, से अनुवाद हुआ है, जिसका अर्थ ''रहस्यों में'' प्रविष्ट होना[15] है। NEB में ''मैंने मानवीय भाग में इसके सब उतार-चढ़ावों के साथ पूरी तरह से प्रविष्टि की है।'' मूर्तिपूजक साम्प्रदायिक *mueo* का इस्तेमाल अपने अनुष्ठानों के लिए करते थे। पौलुस किसी ''रहस्यमयी,'' ''रहस्य'' के अनुष्ठान में से नहीं निकला था। इसके बजाय उसका पूरा जीवन ही ''प्रविष्टि'' की प्रक्रिया था, जिसके द्वारा उसने अद्‌भुत रहस्य सीखा था। वह ''रहस्य'' यह था कि चाहे जो भी हो जाए, वह प्रभु के साथ ही रहेगा (2 तीमुथियुस 4:16-18), उसे दृढ़ करेगा और उसकी सहायता करेगा।

यह सच्चाई उसमें व्यक्त की जाती है, जिसे पौलुस के फिलिप्पियों की सबसे प्रसिद्ध आयत और इस अध्याय का ''सर्वश्रेष्ठ और व्यापक संदेश'' कहा जाता है, यह पौलुस की ''सबसे प्रसिद्ध बातों''[16] में मिलती है:[17] ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। ''उस'' शब्द का इस्तेमाल प्रेरित ने यीशु के लिए किया। KJV ''मसीह यीशु के द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं, जो मुझे सामर्थ देता है।'' ''मसीह'' शब्द प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं मिलता, पर वचन में जिसने भी यह नाम जोड़ा है, वह ''पौलुस की मंशा को सही ढंग से समझता था।''[18]

हिन्दी अनुवाद से फिलिप्पियों 4:13 के शब्द की सामर्थ को दिखा पाना कठिन है। ''मैं कर सकता हूं'' का अनुवाद ''मज़बूत'' (ischuros) के लिए शब्द से क्रिया रूप से की गई है।[19] ह्यूगो मेकोर्ड ने आयत 13 के पहले भाग का अनुवाद इस प्रकार किया है: ''मेरे पास हर परिस्थिति के लिए सामर्थ है।''[20] आयत के पिछले भाग में, ''सामर्थ देता'' का अनुवाद यूनानी मिश्रित शब्द से किया गया है। उस शब्द का मुख्य भाग *dumamis* के क्रिया रूप से है जिससे हमें ''डायनामाइट'' शब्द मिला है। इसके पहले ''में'' उपसर्ग (यू.: en) लगता है। आयत के इस भाग का अनुवाद करने का एक और ढंग है ''जो मुझ में शक्ति डालता है।''[21] यह आयत वर्तमानकाल में है (निरन्तर क्रिया का संकेत देते थे) सो इसका अनुवाद हो सकता है, ''मैं उसके द्वारा जो *लगातार* मुझे सामर्थ देता रहता है, सब कुछ *करते रह* सकता हूं!'' आज इस आयत का अनुवाद जैसे भी करें यह सामर्थ और आत्मविश्वास से लबालब है।

- TEV: ''मुझ में उस सामर्थ से जो मसीह मुझे देता है, हर परिस्थिति का सामना करने की शक्ति है।''
- CEV: ''मसीह मुझे किसी भी बात का सामना करने की शक्ति देता है।''
- फिलिप्स: ''मैं उसकी सामर्थ से जो मुझ में रहता है, कुछ भी करने को तैयार हूं।''

इससे बढ़कर मसीही लोगों को मज़बूत करने वाला मुझे तो कोई और वचन पता नहीं है। इसे संघर्ष के समयों में ''अंधेरे स्थान में एक किरण''[22] कहा गया है। जीवन की कुछ परिस्थितियों का इलाज हो सकता है, परन्तु कुछ परिस्थितियों को सहना पड़ता है। मसीह की शक्ति हमें आनन्द के साथ किसी भी परिस्थिति का लाभ लेने की अनुमति देती है। मसीह के साथ चलते हुए परमेश्वर हमें हमारी आवश्यकता के अनुसार सामर्थ देता है।

परन्तु आयत 13 के लिए कुछ गुण आवश्यक हैं। यह कहने से ''मैं सब-कुछ कर सकता

हूं'' पौलुस का अभिप्राय यह नहीं था कि वह बीस फुट ऊंची बाढ़ को कूद सकता है, प्रति घंटा एक सौ मील भाग सकता है या साठ मिनट तक सांस रोक सकता है। संदर्भ में ''सब-कुछ'' का अर्थ वे सब बातें हैं, जिनकी चर्चा 11 और 12 आयतों में की गई है। यीशु के कारण प्रेरित ''अच्छी'' और ''बुरी'' परिस्थितियों में सन्तुष्ट हो सकते थे!

तौभी भी हम कुछ हद तक प्रासंगिकता को बढ़ा सकते हैं। मूल धर्मशास्त्र में, ''सब [बातों'' पर ज़ोर देते हुए ''*सब* कुछ कर सकता हूं मैं,'' आयत के आरम्भ में है। यदि हम पौलुस के शब्दों को इस प्रकाश में देखें तो हम उनके साथ कोई अन्याय नहीं करेंगे: ''मैं वह सब कुछ कर सकता हूं जो प्रभु मुझ से चाहता है कि मैं करूं-सब कुछ जो उसकी इच्छा से मेल खाता है।'' LB में इसका अनुवाद इस प्रकार है: ''मैं वह सब-कुछ कर सकता हूं, जो परमेश्वर मुझ से करने को कहता है।'' कई बार लोग यह कहते हुए बहाने बनाने की कोशिश करते हैं, ''पर जो प्रभु मुझ से अपेक्षा करता है मैं वह नहीं कर *सकता।*'' फिलिप्पियों 4:13 यह आश्वासन देता है कि यदि प्रभु आप से कुछ करने को कहे तो आप उसे कर *सकते* हैं। इसे करने में वह आपकी *सहायता* करेगा। बहाने बनाना छोड़ दें!

स्रोत

आयत में पाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण योग्यता अनुवादित शब्दों ''उसके द्वारा'' में मिलती है। KJV और NIV दोनों में ''के द्वारा'' शब्द का इस्तेमाल सम्भवतया आसान अनुवाद देने के लिए किया। परन्तु NASB में ''के द्वारा'' पर यह नोट है: ''मूल[तया] *में।*'' लोगों ने फिलिप्पियों 4:13 की तसल्ली को भ्रमित रूप से सब तक फैला दिया है। यह आयत ''सकारात्मक सोच वाली'' रैलियों में नारे के रूप में इस्तेमाल की जाती है। इसे परमेश्वर के विद्रोह में जीवन बिताने वाले पुरुषों और स्त्रियों को प्रोत्साहित करने के लिए भी इस्तेमाल किया गया है। इस आयत का इस्तेमाल इस प्रकार करने वालों ने इस आयत के मुख्य शब्दों ''उस *में*'' को नज़रअंदाज कर दिया है। इस आयत की सांकेतिक प्रतिज्ञा *केवल* उन्हीं के लिए है, जो ''मसीह में'' हैं यानी जिन्होंने उस में बपतिस्मा लिया है (गलातियों 3:26, 27), अर्थात जो उस में जी रहे हैं (देखें कुलुस्सियों 2:6)।

पौलुस का ''रहस्य'' *यीशु* था। स्थिर रखने वाली सामर्थ प्रभु ही देता था (देखें 2 कुरिन्थियों 12:9, 10)। मसीह पर भरोसा रखना सीखकर (आयत 13) प्रेरित सन्तुष्टि के रहस्य में प्रविष्ट हो चुका था (आयत 12)। वह आत्म-पर्याप्त था (आयत 11)। अपने ही संसाधनों के कारण नहीं, बल्कि मसीह के संसाधनों के कारण; (आयत 13; देखें आयत 19)। क्या आपने कभी मुर्गी के चूजों को पंखों के नीचे सुरक्षा के लिए भागते देखा है? इसी प्रकार पौलुस ने ''मसीह के साथ परमेश्वर में'' अपने आपको छिपाना सीख लिया था (कुलुस्सियों 3:3)।

जॉन वाल्वुड ने लिखा है, ''[पौलुस को] जो रहस्य मिला वह है कि परमेश्वर चाहता है कि हर मसीही जान ले कि छुटकारा वस्तुओं और परिस्थितियों पर निर्भरता से नहीं बल्कि मसीह पर पूरी निर्भरता।''[23] संसार को वह रहस्य पता नहीं चला है। इसका मानना है कि यह धन से ... या शिक्षा से ... या विज्ञान से ... या कठिन परिश्रिम से ... या राजनैतिक प्रभाव से ... या ... सकारात्मक सोच से, ''सब कुछ कर'' सकता है पर अन्त में ये सब बातें निराश ही करती

हैं। जीवन में एक बात की निश्चितता प्रभु है। फिलिप्पियों 4:13 आज भी उतना सच है, जितना लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे जाने के समय था: ''जो मुझे सामर्थ देता है उस [यानी यीशु] के लिए मैं सब-कुछ कर सकता हूं।''

प्रभु ने पौलुस को सामर्थ दी थी और वह हमारा भी सामर्थ देने वाला है (देखें इफिसियों 3:16; कुलुस्सियों 1:11)। यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5घ)। ''कुछ नहीं'' कर पाने और ''सब-कुछ'' कर पाने में अन्तर (फिलिप्पियों 4:13) में ही मसीह है।[24] हम उसके द्वारा *क्या* कर सकते हैं? जो कुछ प्रभु हम से करवाना चाहे! कोय रोपर ने लिखा है:

- भौतिकवादी संसार में, पौलुस की तरह हम जो कुछ हमारे पास है, उससे सन्तुष्ट होना सीख सकते हैं।
- अनैतिक संसार में, हम शुद्ध और नैतिक जीवन बिता सकते हैं।
- आनन्द के शौदाई संसार में, हमारे जीवनों का ध्यान परमेश्वर की बातों पर हो सकता है।
- मूर्तिपूजक संसार में, हम अपने आपको यीशु को और केवल उसी को दे सकते हैं। क्या आपको लगता है कि आप मसीही जीवन नहीं जी सकते? आप जी सकते हैं *उसकी* सामर्थ से![25]

सारांश (4:14)

एक बार फिर मैं वचन पाठ के साथ न्याय नहीं कर पाया हूं। परन्तु इस बार समस्या यूनानी भाषा की जटिलता की नहीं, बल्कि मेरी है। मैं अभी भी जीवन की हर परिस्थिति में सन्तुष्ट होने की चुनौती से लड़ता हूं। मैं अभी भी अपने ही संसाधनों के बजाय प्रभु पर निर्भर रहना सीख रहा हूं। मैं परमेश्वर से सहायता के लिए कहता हूं और यदि आपकी भी वैसी ही समस्याएं हैं तो वह *आपकी* भी सहायता कर सकता है।

फिलिप्पियों की ओर से सहायता मिलने के कारण आनन्दित होने के बाद पौलुस ने कहा था कि वह ऐसे दानों पर निर्भर नहीं था। यानी प्रभु ने उसकी सहायता की थी, चाहे उसके पास थोड़ा हो या बहुत। इसका अर्थ यह लिया जा सकता है कि उसने फिलिप्पियों के दान के लिए धन्यवाद नहीं किया। इसलिए उसने जोड़ दिया, ''तौभी *तुम ने भला किया* कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए'' (आयत 14)। अगले पाठ में हम पौलुस का अपने मूल पाठकों के लिए असामान्य ''धन्यवाद'' की समीक्षा जारी रखेंगे।

इस पाठ का समापन करते हुए मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आपको सन्तुष्टि का, पौलुस का ''रहस्य'' पता चल गया या नहीं। बहुत से रहस्य हो सकते हैं जिन्हें आप जानना चाहेंगे-जैसे सफलता का रहस्य, अच्छे विवाह का रहस्य, माता-पिता बनने का रहस्य, या केवल ''दादी के नुस्खे'' हो सकते हैं। परन्तु अन्त में जिस ''रहस्य'' जिसका महत्व है, वह यीशु मसीह है: उसे जानना, उसमें होना, उसमें स्थिर रहना, उस पर भरोसा और निर्भर रहना सीखना है। यदि आपने उसमें बपतिस्मा नहीं लिया है (रोमियों 6:3, 4) तो आज ही ले लें। यदि आप मसीही तो हैं पर

उसके साथ चल नहीं रहे हैं, यदि आप भटक गए हैं (देखें इब्रानियों 3:10) तो आज ही उसके पास और उसके लोगों के पास लौट आएं (1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)।

टिप्पणियां

[1]अरल एफ़. पामर, *इंटेग्रिटी इन ए वर्ल्ड ऑफ़ प्रिटेंस: इन साइट फ्रॉम द बुक ऑफ़ फिलिपियंस* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 170. [2]वही, 169. [3]वेयन जैक्सन, *दि बुक ऑफ़ फिलिपियंस* (अबिलेन, टैक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशंस, 1987), 85. [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडेड वाइन'स एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहलेन्बर्गर III (मिनियापोलिस: बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 966. [5]प्लमर, 169. [6]''मैं'' शब्द पर दोहरा ज़ोर है। पहले तो इस पर *दोहराव* से ज़ोर दिया गया है: अनुवादित क्रिया ''मैंने सीखा'' में ''मैं'' का संकेत है, परन्तु ''मैं'' (ego) के लिए यूनानी शब्द को क्रिया से पहले जोड़ा गया है। दूसरा, वाक्यांश में इसकी *स्थिति* से ज़ोर दिया जाता है: इसे वाक्यांश में पहले रखा गया है (''के लिए'' के यूनानी शब्द से पहले); यह प्राथमिकता की सीख है। [7]जेम्स एम. टोले, *नोट्स ऑन फिलिपियंस* (सेन फरनैंडो, कैलिफोर्निया: टोले पब्लिकेशंस, 1972), 73. [8]लियोन बेरनस, *दैट यू मे नो क्राइस्ट: स्टडीज़ फ्रॉम फिलिपियंस* (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 1992), 161. [9]वाइन, 226. [10]वही।

[11]गैरल्ड एफ. हॉथोर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिपियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड और ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 198. [12]विलियम बार्कले, *दि लैटरर्स टू दि फिलिपियंस, कोलोशियंस एंड थेस्लोनियंस,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 85 में उद्धृत। [13]अलेस मोटायर, *दि मैसेज ऑफ़ फिलिपियंस: जीज़स अवर जॉय,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1984), 217. [14]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स हाउस, 1983), 148. [15]वाइन, 595. [16]हॉथोर्न, 200. [17]अर्डमैन, 148. [18]हॉथोर्न, 201. [19]वाइन, 1097. [20]ह्यूगो मेकोर्ड, *मेक्रोर्ड'स न्यू टैस्टामेंट ट्रांसलेशन ऑफ़ द एवरलास्टिंग गॉस्पल* (हैंड्रिक्सन, टैनिसी: फ्रीड-हार्डमैन यूनिवर्सिटी, 1988) 197.

[21]देखें बार्कले, 84. [22]राल्फ पी. मार्टिन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 179 में उद्धृत ओलिवर क्रॉमवेल। [23]जॉन. एफ़. वालवूर्ड, *फिलिपियंस: ट्रायंफ इन क्राइस्ट,* एवरीमैन'स बाइबल कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1971), 113-114. [24]यह विचार एवन मेलोन, *प्रैस टू प्राइज़* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 118 से लिया गया था। [25]यह सूची मैट्रो चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ग्रेटर डेट्रोयट, मिशिगन, 7 जून 1987 में दिए गए कोय रोपर के संदेश, ''आई कैन डू ऑल थिंग्स'' से ली गई थी।